IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

वैदिक कर्मकांड में वर्णित कर्णवेध संस्कार की उपयोगिता

आचार्य कमले”ा कुमार मिश्रा
अतिथि विद्वान संस्कृत पाली एवं प्राकृत विभाग
रानी दुर्गावती वि”वविद्यालय जबलपुर म.प्र.

प्रस्तावना

जिस संसार में वि”ोश विधिपूर्वक बालक एवं बालिका के दाहिने एवं बायें कान का छेदन किया जाता है उसे कर्णवेध संस्कार कहा गया है। व्यास स्मृति में इस संस्कार की ‘ाोडस संस्कारों में गणना है और वहां बताया गया है कि “ कृते चूड़े च बाले च कर्ण वेधो विधीयते। ” (व्यास स्मृति 1/19) अर्थात् जिसका चूड़ाकरण हो गया हो उस बालक का कर्णवेध करना चाहिये।

बालक के जन्म होने के तीसरे अथवा पांचवें वर्श में कर्णवेध करने की आज्ञा है। दीर्घायु और श्री की वृद्धि के लिये कर्णवेध संस्कार की भाास्त्रों में वि”ोश प्र”ांसा की गई है, कर्णवेधं प्र”ासन्ति पुश्टायु: श्री विवृद्धयें (गर्ग संहिता 2.1.9) इसमें दोनों कानों में वेध करके उनकी नस को ठीक करने के लिये सुवर्ण का कुंडल धारण कराया जाता है। यह केवल सौन्दर्य या परम्परा नहीं बल्कि भाास्त्र–आयुर्वेद, विज्ञान के आधार पर भाारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक एवं पजनन स्वास्थ्य को संतुलित करने वाला एक वैज्ञानिक कर्म है।

1. कर्णवेध संस्कार क्या हैं ६

   कर्णवेध त्र कर्ण (कान) वेध (छेदन) यह f”k”kq के कानों में छिद्र करके श्रवण भाक्ति को बढ़ाने आभूशण धारण करने और स्वास्थ्य रक्षा का संस्कार है। भाास्त्रीय आधार सुश्रुत संहिता (सूत्र 16/3) में स्पश्ट उल्लेख है “ कर्णौ वेधयेत रक्षार्थम् आभूशणार्थम् च ” रक्षा भूशण निमित्तम् बालस्य कर्णौ विध्येत्। पूर्व दक्षिणं कुमारस्य वामं कुमार्या: तत: पिचु वर्तिम प्रवे”ायेत्। (सूत्र स्थान 16/3)

   पहले बालक का दायां कान फिर बायां कान में छिद्र किया जायें। बालिका को पहले बायें कान फिर दायें कान में छिद्र किया जावें। जब छिद्र पुश्ट हो जाये तो स्वर्ण सलाका या कुंडल धारण आदि करना चाहियें। सुवर्ण के स्प”ार्ं से बालक स्वस्थ्य और दीर्घायु होता है। बालक के कान में सूर्य की किरण के प्रवे”ा के योग्य और कन्या के कान में आभुशण पहनने के योग्य छिद्र कराना चाहियें। (कुमार तंत्र चक्रपाणि) ग्रंथ में कहा गया है कि कर्णवेधन संस्कार से बालारिश्ठ उत्पन्न करने वाले बालग्रहों से बालक की रक्षा होती है और इसमें कुंडल आदि धारण करने से मुख की भाोभा बढ़ जाती है।

2. विधि :– भाुभ मुहूर्त (भाुक्ल पक्ष वि”िाश्ट नक्षत्र जैसे अ”िवनी, पुश्य, आदि) समय प्रात: काल

   मंत्रोच्चारण – “ भद्रं कर्णेभि: भाृणुयाम देवा: , (ऋग्वेद 1.89.8) से अभिमंत्रित किया जाता है।

प्राकृतिक छिद्र (दैवकृत छिद्र) पर सोने चांदी ताबें की सुई से वर्ण अनुसार छेदन करें। सुश्रुत कहते हैं :– सूर्य की किरणों में छिद्र दिखाई देने वाले बिन्दु पर ही छेदें ताकि नस नाड़ी न टूटे। यह संस्कार उपनयन से पहले (6–16 माह या 3–5–7 वर्श) विशम वर्श में किया जाता है।

3. कर्णवेध संस्कार क्यों किया जाता हैं ध्

भाास्त्रीय उद्दे”य – श्रवण इन्द्रिय को भाुद्ध एवं सक्षम बनाना (श्रुति–ज्ञान ग्रहण करने के लिये) पूर्ण स्त्रीत्व/पुरूशत्व की प्राप्ति सूर्य की किरणों का छिद्र से प्रवे”ा कर तेज की वृद्धि हेतु कर्णवेध संस्कार से रहित पुरूश श्राद्ध का अधिकारी नहीं होता ऐसा भाास्त्र वचन है।

दा”ार्निक आयाम :– 16 संस्कार मानव जीवन को ‘‘संस्कृत‘‘परिश्कृत करने की प्रक्रिया है। कर्णवेध ‘‘ श्रवण‘‘ इन्द्रिय को संस्कारित करता है जो वेदज्ञान– गुरू उपदे”ा एवं धार्मिक श्रवण (श्रुति) के द्वार खोलता है। यह आत्मसंस्कार का प्रतीक है :– बाह्य छिद्र, आंतरिक – श्रवण–चेतना को जाग्रत करता हैं। सांख्य द”ार्न के अनुसार इन्द्रियों का भाुद्धिकरण मोक्ष मार्ग का आधार है। यह कर्म भौतिक होते हुए भी आध्यात्मिक कर्म है जो प्रारब्ध को भाुद्ध करता है। (जैसे गर्भ में स्थित भारीर की)

4. कर्णवेध संस्कार के लाभ (वैज्ञानिक, आयुर्वेदिक एवं आयुर्वेदिक आधार सुश्रुत संहिता) प्रजनन स्वास्थ्य कान के लोब में मर्म बिंदु हैं। छेदन से लड़कियों में मासिक धर्म नियमित होता है। हिस्टिरिया दूर होता है। लड़कों में हाइड्रोसील/हर्निया की रोकथाम मस्तिश्क विकास लोब के मस्तिश्क के दोनों से जुड़े हैं। छेदन से डमउवतल (स्मरण भाक्ति) एकाग्रता एवं नाडो सिस्टम संतुलित होता है। अन्य आंखों की रो”ानी ऊर्जा प्रवाह, भवसन रोग में सहायक होती है।

वैज्ञानिक वि”लेशण :– आरिकुलर एक्यूपंचर/एक्यूप्रे”ार कान पर 200+ बिंदु होते हैं। जो कि पूरे भारीर के अंगों से जुड़े होते हैं। ॅभ्व् द्वारा मान्यता प्राप्त लोब का बिंद इतंपद ीमउपेचीमतमे (मस्तिश्क) टंहने दमतअम और म्दकवबतपदम `लेजमउ को प्रभावित करते हैं।

न्यूरों–साइंस छेदन से स्थानीय जपउनसंजपवद से मदकवतचीपदे रिलीज़ जतपेध्दगपमजल कम हवसक मंतपदहे विद्युत चालक (कन्डक्टर) करंट संतुलित करता है। इम्यूनिटी एवं भवसन चीनी एक्यूपक्चर जो वैदिक ज्ञान से प्रेरित माना जाता है। इसी बिदु पर प्रेंसिंग से अस्थमा/टी.बी. जैसी स्थिति में सहायक होते हैं। वैदिक ऋशियों ने प्रत्यक्ष अनुभव से यह जाना था। आज त्बजे और श्र्उतप अध्ययन इसी को वैध कर रहे हैं।

निश्कर्श :– यह संस्कार मात्र कर्णवेध नहीं भारीर मन आत्मा को एकीकृत करने का प्राचीन वैज्ञानिक विधान है। सनातन परम्परा में हर कर्म का वैज्ञानिक आधार है। कर्णवेध इसका जीवंत प्रमाण है अतः यह बालक एवं बालिकाओं दोनों के लिये सामान रूप से आव”यक है।

संदर्भित प्रमाणिक ग्रंथ :–

1. गोभिल गृह्यसूत्र (1.8)
2. सुश्रुत संहिता (सूत्र स्थान 16/3)
3. अश्टांग हृदयम् (अध्याय 3 ‘ाड्वृत्तीयम्)
4. मनु स्मृति (1/111) (2/39)
5. व्यास स्मृति (1/19)
6. परा”ार स्मृति (2/15–16)
7. गर्ग संहिता (2/1/9)